राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 65
क्राइम किंग
नागराज
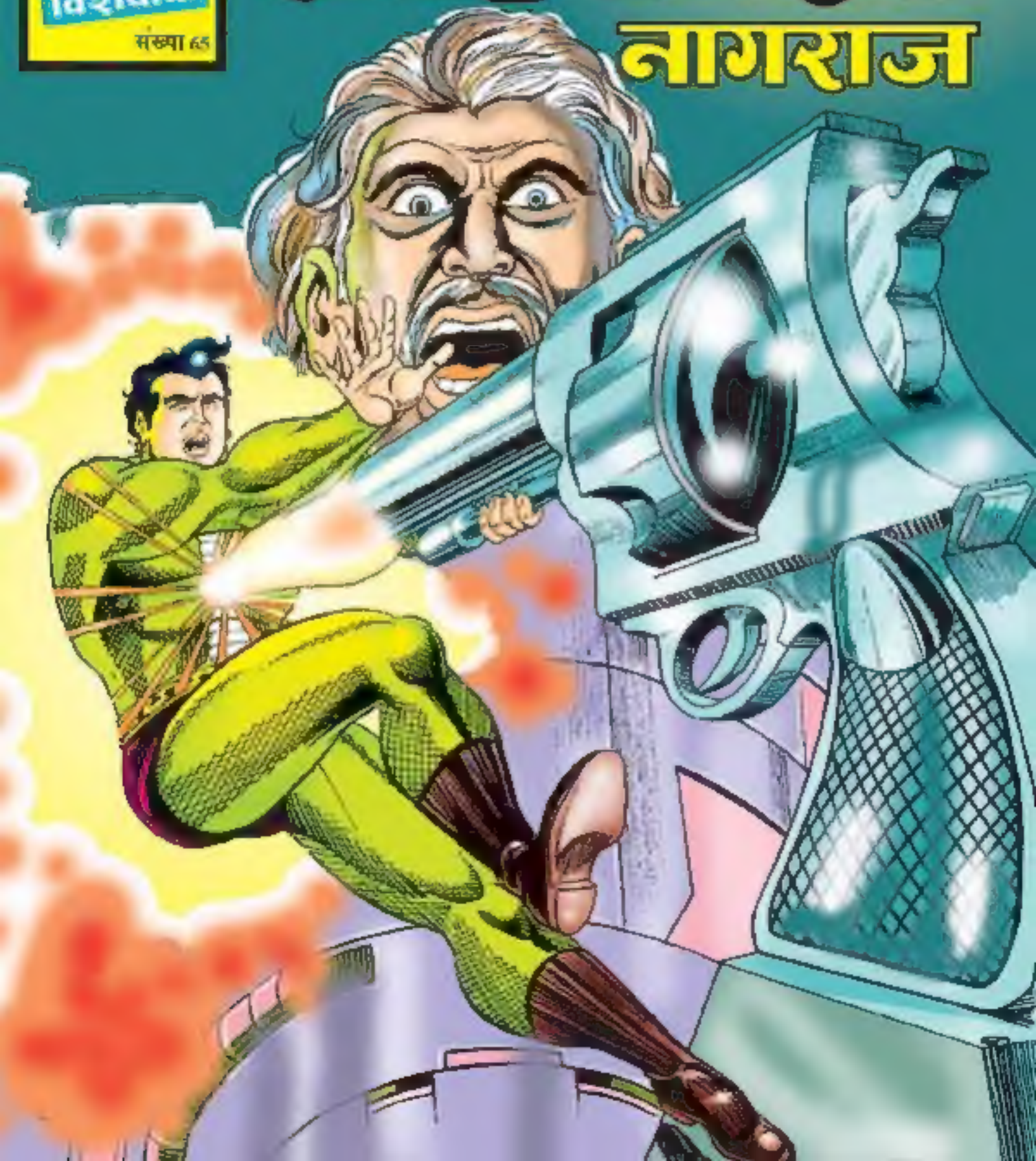
महानगर- राज धानी नागराज का नया घर। और नागराज को अपने घर में गन्दगी पसन्द नहीं! अपराध जैसी गन्दगी! और इसी गन्दगी को दूर करने के लिए नागराज के नाग पूरे महानगर में फैल चुके हैं। जो ढूंढेंगे अपराध के अड्डे। उसकी मानसिक सूचना पहुंचाएंगे नागराज तक...

... और नागराज खत्म करेगा अपराध- साम्राज्य उस अनोखे अपराधी का, जिसको अपराध की दुनिया कहती है...

धांय
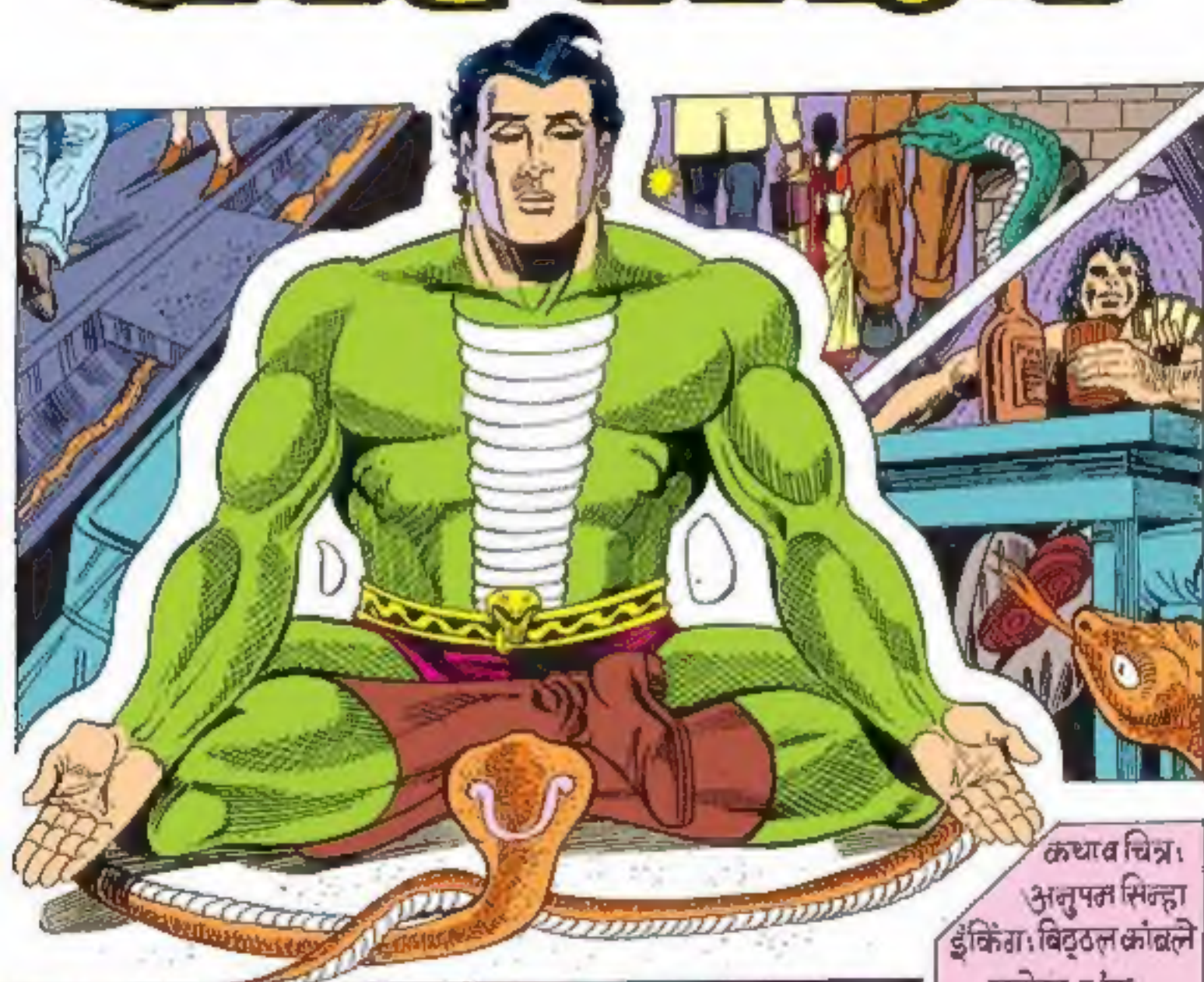
कथा व चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

इनमें से कुछ अपराधों से तो नागसेना के सैनिक खुद ही निपट लेते हैं...
आह!
...लेकिन कुछ अपराधों से निपट सकता है सिर्फ उनका स्वामी...
...नागसम्राट नागराज-
मुझे गरलदंत के मानसिक संकेत प्राप्त हो रहे हैं।
वह महानगर के पूर्वी छोर पर स्थित एक गोदाम से मुझे संकेत भेज रहा है... यानी वक्त आ गया है...
...नागराज का...
...महानगर के अपराध-जगत को खत्म करने का अभियान शुरू करने का।
और- महानगर के पूर्वी इलाके गोरीवेदर के एक गोदाम में-
संभल कर! इन पेटियों में बारूद भरा हुआ है। गिरने न पाए।

आऽऽऽह्
क्या कर रहा है, बे? खुद ही गिरा दिया न पेटी को! चक्कर आ रहे हैं क्या?
स... सांप! सांप!
एक सांप से डर रहा है?
अभी इसका काम तमाम किए देता हूं!
ले!
संभल कर...
अरे! अरे! यह क्या?
यह सांप तो... उड़ रहा है!
अरे... अरे... उस कलाई के अन्दर समा रहा है...
...इसका तो एक ही मतलब है, शाही...
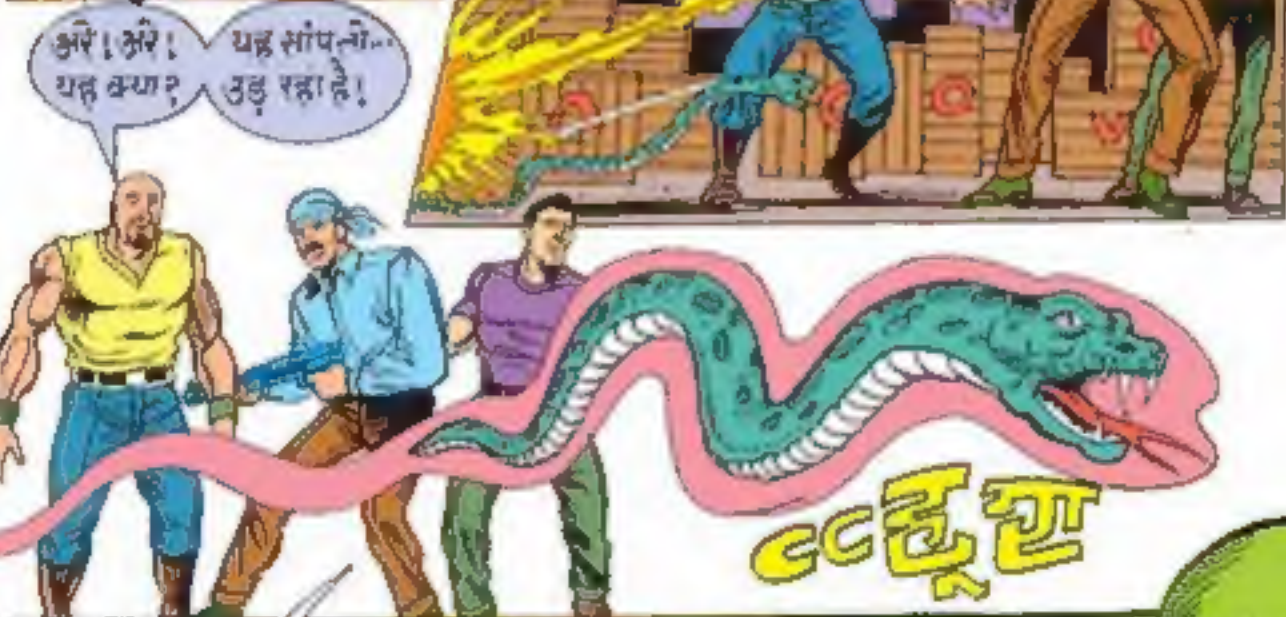
... कि अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का दुश्मन नागराज यहां पर आ चुका है।
नागराज महाबली है; लेकिन ये यहां तक कैसे पहुंच गया?
सोचो, खूब सोचो! लेकिन इस टूटे बक्से ने मुझे यह जरूर बता दिया है कि मैं पहुंचा सही जगह पर हूं।
और अब तुम लोगों को भी सही जगह पर पहुंचा दिया जाए। जेल में।
भून डालो इसको!
बड़े मूर्ख अपराधी हो! मुझे जानते हो, पर मेरी शक्तियां नहीं जानते!
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
धांय धांय धांय
बूम
वैसे तो गोलियों से मुझे ना ही तकलीफ होती है...
... लेकिन इस वक्त हम लोग बारूद से भरे एक गोदाम में खड़े हैं...

... और धमाकों से मेरे कानों को बहुत तकलीफ होती है।

इसलिए सबसे पहला काम तो तुमलोगों के हाथों से इन खतरनाक खिलौनों को आजाद करवाना है।

और उसके तुरन्त बाद...

... तुम लोगों के दिमागों को...

... अच्छी तरह से हिलाना है...

... ताकि तुमको यह याद आ जाए कि तुम किसके लिए काम करते हो! बोलो! किसका है यह गोदाम? कौन है तुम्हारा मालिक?

यह हम तुमको नहीं बता सकते नागराज ! क्योंकि अगर हमने तुमको कुछ बताया तो हम जिन्दा नहीं बचेंगे !

और अगर तुम लोगों ने मुझे यह नहीं बताया, तो भी तुम लोग जिन्दा नहीं बचोगे !

हम जानते हैं कि तुम्हारे चंगुल में आकर बच निकलना असंभव है नागराज ! हम तो दोनों तरफ से मारे जायेंगे ...

... लेकिन अगर हम डूबेंगे ...

... तो तुम भी हमारे साथ डूबोगे नागराज !

हिस्स

ओह नो !

नागराज, अगर बिजली की सी फुर्ती न दिखाता ...

★ भारती एक 'सैटेलाइट-चैनेल में काम करती है।

आखिर हम जा कहां रहे हैं, नागराज ?
बिज़नेस शुरू करने के लिए पहला कदम उठाने आरती ! अगर हम किसी व्यापार में पैसा लगाने जा रहे हैं, तो उस पैसे का सही हिसाब-किताब होना बहुत जरूरी है।
वर्ना कल को यह सवाल कभी भी उठ सकता है कि 'आरती कम्यूनिकेशन' के पास वह करोड़ों रुपया आखिर आया कहां से !
बात तो सही है ! इस बारे में तो मैंने सोचा ही नहीं ! फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?
मैंने अपने खज़ाने का एक हिस्सा सरकार को सौंप देने का निर्णय लिया है, आरती ! उसके एवज़ में सरकार हमें उसके मुआवज़े के रूप में काफी पैसा देगी !
और वह सारा सफेद धन होगा।
वाह ! ठीक वैसा ही, जैसे सरकार ने हैदराबाद के निज़ाम का खज़ाना लेने के समय किया था।
हां ! और यह पूरा काम अत्यंत गुप्त रूप से होगा !
यह मेरा अनुरोध था, और मंत्रालय ने मेरा यह अनुरोध मान लिया है।
अभी हम इसी मंत्रालय के मिनिस्टर से मिलने जा रहे हैं आरती !

इसी वक्त-
महानगर में ही किसी अज्ञात स्थान पर-
गुलाम अंदर आने की इजाजत चाहता है, महामहिम हेड!
आओ, गुलाम!
हेड को गुलाम का सलाम!
क्या तुम हेड को यह बताने आए हो कि कल रात को हमारा गोदाम नंबर 25 जलकर राख हो गया। और हमारे तीन आदमी मारे गए?
नहीं, स्वामी। मैं जानता हूं कि महानगर में घटने वाली हर घटना का आपको तुरन्त पता चल जाता है। मैं आपको यह बताने आया हूं कि खबर एकदम पक्की है। गोदाम, नागराज ने ही नष्ट किया है!
हुम! मुझे शक तो था कि कहीं पुलिस ने कोई मन-गढ़ंत कहानी तो नहीं बनाई है! नागराज का नाम लेकर हमें डराने के लिए!
लेकिन ऐसा नहीं है। नागराज सचमुच महानगर में ही है। खैर, घबराने की जरूरत नहीं है। नागराज किसी एक जगह पर टिक कर नहीं रहता...
... वह महानगर में ज्यादा दिन तक नहीं रहेगा!
इसलिए जब तक वह इस शहर में है तब तक सारे धंधे बंद कर दो!

हम खामख्वाह कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते हैं!
जो आज्ञा महामहिम!
ये था महानगर के अपराध-जगत का सुप्रीम डॉन-हेड-
जिसका ख्याल पूरी तरह से गलत था-
महानगर में नागराज जाने के लिए नहीं आया था-
हमने तुम्हारे द्वारा सरकार को दिए गए रत्नों का मूल्यांकन करवाया है नागराज! वैसे तो वे रत्न बेशकीमती हैं...
...लेकिन उनके मुआवजे के रूप में सरकार ने तुमको 65 करोड़ रुपए देने का निर्णय लिया है। इस राशि का चेक तुमको तीन-चार दिनों में मिल जाएगा
मैंने आपसे यह मामला गुप्त रखने का अनुरोध किया था, सर! इसीलिए मैं चाहता हूं कि यह चेक मेरी सहयोगी मिस भारती के नाम पर हो।
तुम्हारी प्रार्थना वैसे तो असामान्य है नागराज, लेकिन देश के प्रति तुम्हारी सेवाओं को देखते हुए, हम तुम्हारी बात मानने को बाध्य हैं।
धन्यवाद सर! अब हमें इजाजत दीजिए!
अगर आगे कोई आवश्यकता हुई तो मिस भारती आकर आपसे मिल लेंगी।
वाह, नागराज! तुमने तो एक बड़ी समस्या को चुटकी बजाते ही आसान कर दिया!
तुम्हारा भी जवाब नहीं!

अब तो तुम मेरे साथ चल सकते हो न! मेरे डैडी से मिलने!

अभी मिलने का कोई फायदा नहीं है, भारती! चेक मिल जाने के बाद बात करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा!

वैसे भी, मैं पहले ही कह चुका हूं कि मैं इस पूरे मामले में सामने आना नहीं चाहता! क्योंकि मैं यह जाहिर नहीं करना चाहता कि 'भारती कम्यूनिकेशन' से नागराज का कोई संबंध है!

यदि यह संबंध जाहिर हो गया तो मेरे दुश्मन, 'भारती कम्यूनिकेशन' को अपना निशाना बनाना शुरू कर देंगे। और फिर मेरा नागराज से राज बनने का कोई मतलब नहीं रह जाएगा!

मैं 'भारती कम्यूनिकेशन' में एक मामूली कर्मचारी बनकर ही काम करूंगा और तुम रहोगी, 'भारती कम्यूनिकेशन' की मालिक...

... और दुनिया के मामले राज का और तुम्हारा कोई संबंध नहीं रहेगा

वैसे भी, अभी मेरे लिए यह पता करना ज्यादा जरूरी है कि वह गोला-बारूद से भरा गोदाम, देश के किस गद्दार का था!

अगले कुछ दिनों तक, महानगर के अपराधियों के दिल में नागराज का आतंक छाया रहा–

कुछ धंधे तो सुप्रीम हेड ने खुद बंद कर दिए थे–

और बाकी धंधे नागराज ने बंद करवा दिए, और हर अपराधी से नागराज का एक ही सवाल था–

कौन है अवैध गोले-बारूद और गुंडों का मालिक? कहाँ रहता है देश का यह गद्दार?

नागराज का ख्याल सही था-
यह शांति तूफान के पहले की शांति थी-
हां, महामहिम।
हूम! यानी नागराज ने पूरे महानगर में अपराधियों का कारोबार ठप्प कर दिया है। हमको रोज लाखों रुपयों का नुकसान हो रहा है। और वह नागराज, महानगर से जाने का नाम ही नहीं ले रहा!
हमारे धंधे बंद कर देने के बाद भी वह हमारे अड्डों तक पहुंच गया, सुप्रीम हेड। और उनको भी तबाह कर दिया।
लेकिन वह हमारे अड्डों तक पहुंचा कैसे? वे तो अत्यन्त गुप्त जगहों पर थे। यह पता करवाओ कि कहीं हममें कोई गद्दार तो नहीं।
ऐसा असंभव है, महामहिम।
हूम! अभी हमारे कितने ठिकाने बचे हुए हैं?
सिर्फ एक महामहिम
वही गुप्त, नागराज वहां पर जरूर आएगा और जल्दी ही आएगा।
वहां पर नागराज के स्वागत का इंतजाम करके रखो
पूरा इंतजाम।
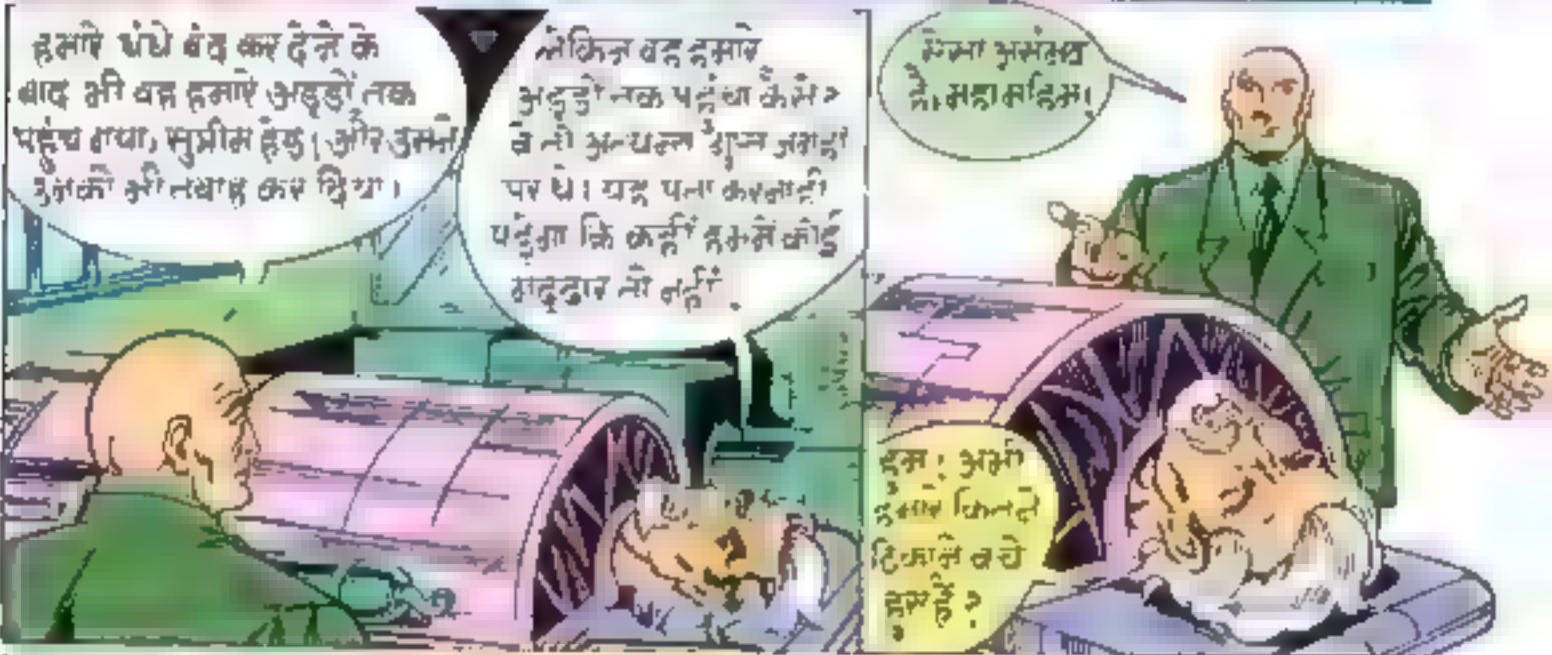
इसी वक्त - महानगर के दूसरे हिस्से में -
मैं पहले भी कह चुका हूं और फिर से कह रहा हूं, डॉन पाशा...
...आपका पैसा मैं एक महीने के अंदर-अंदर चुका दूंगा ! पाई-पाई।
वह कल की बात थी, मिस्टर पहलेजा, आज की बात करो
पैसा हमको आज चाहिए ! अभी चाहिए ! नागराज ने हमारे सारे धंधे बंद करा दिए हैं पैसे की सख्त कमी हो गई है !
जब तुमको जरूरत थी, तब हमने तुमको पैसे दिए ! जितने चाहे उतने दिए। और वह भी उस वक्त जब बैंकों ने भी तुमको उधार देने से मना कर दिया था।
आज हमको पैसों की जरूरत है ! इसलिए हमारे पैसे चुका दो !
जल्दी से जल्दी
मुझे एक हफ्ते का वक्त दो, मुझे अपनी 'सैटेलाइट कंपनी' के लिए नया पार्टनर मिल गया है !
उससे पैसा मिलते ही मैं वह पैसा तुमको दे दूंगा ! ओ. के. ?
ठीक है, एक हफ्ते का वक्त दिया ! लेकिन अगर एक हफ्ते में पैसा हमारे पास न पहुंचा, तो उस खाली फ्रेम में तुम्हारी फोटो लगवाकर तुम्हारे घर वालों को भेज दी जाएगी...
...फूल मालाएं चढ़ाने के लिए ! समझ गए ? अब जाओ और पैसों का इंतजाम करो !

और उसी रात को – नागराज की सर्प-सेना एक बार फिर महानगर का कोना-कोना छान रही थी –
और नागराज उनसे मानसिक संपर्क बनाने के लिए 'ध्यान मुद्रा' में लीन था –
आज कोई संकेत नहीं मिल रहे हैं। अपराधी काफी चालाक है। पहले तो उसने अपने सारे धंधे बंद कर दिए थे, ताकि मैं उसका पता न लगा सकूं। लेकिन मेरी सर्प सेना ने इस तरह जगहों का पता भी लगा लिया था। पर आज तो कुछ भी... ओह! मुझे संकेत मिल रहे हैं...
...ये तो सर्प त्रिपकुंड के संकेत हैं। उसने किसी अपराधिक अड्डे का पता लगाया है...
– मैं इन मानसिक संकेतों का पीछा करता हूं.

कुछ ही देर में नागराज अपनी मंजिल के सामने खड़ा था –
संकेत यहीं से आ रहे हैं।
सामने दो कारें भी खड़ी हैं। जरूर यही मेरी मंजिल होगी।
लेकिन... लेकिन यह क्या? मुझे एकाएक मानसिक संकेत मिलने बंद कैसे हो गए?
विषकूट! विषकूट, तुम कहां हो?
जवाब अगले ही पल नागराज के सामने आ गिरा –
?
विषकूट!
यह तो मृत है, लेकिन यह अभी-अभी मरा होगा! क्योंकि अब तक सिग्नल मुझे मिल रहे थे।
और इस घटना से एक बात साफ हो गई। और वह यह कि ये गुंडे मेरा ही इंतजार कर रहे थे...
...इसीलिए इन लोगों ने विषकूट को ढूंढ लिया और इसे मार दिया।
इन दुष्टों को इस हत्या का दंड तो देना ही होगा।

हालांकि मुझे अच्छी तरह पता है कि वे मुझे मारने की पूरी तैयारी करके बैठे हुए होंगे!
दरवाजा टूटते ही कई घातक हथियार नागराज के शरीर में आ धंसे-
नागराज का शरीर, ऐसे ज़ख्मों को सहने का आदी था-
धम्म
लेकिन गुंडों के शरीर ऐसे वारों को सहने के आदी नहीं थे-
और कुछ ही मिनटों के अंदर-
खत्म हो गया अपराध के कीड़ों का एक और घर!
नहीं, नागराज, यह ट्रेलर तो सिर्फ इसलिए था...

ओह, इसको तो जिन्दा पकड़ना मुश्किल लग रहा है! अब इस पर तेज़ विष-फुंकार का वार करना ही होगा।
हाऽऽह!
एक मिनट! अजीब बात है, यह अपने हाथ की दोनों तलवारों को एक दूसरे के आस-पास भी फटकने नहीं दे रहा! पर क्यों? अगर ये तलवारें एक-दूसरे से छू जायेंगी तो क्या होगा?
अभी देख लेते हैं।
तलवारों के एक-दूसरे से छूते ही चिंगारियों से कमरा चमक उठा—
और अगले ही पल- कोटर की चीखें कमरे में गूंज उठी-
आऽऽह

आह! तो मेरा सोचना सही निकला! ये दोनों तलवारें, बिजली के दो पॉजिटिव और निगेटिव तारों की तरह थीं।

जो जब आपस में छूते हैं तो शार्ट-सर्किट हो जाता है, खत्म हो गया कोटर...

...लेकिन... लेकिन ये तो बाहर भाग रहा है।

शायद अब इसका मुझसे झगड़ा करने का मूड नहीं है! लेकिन मैं इसको भागने नहीं दूंगा, क्योंकि मुझे इसके बॉस का पता पूछना है।

ओह! यह कार में भाग निकला।

लेकिन यहां पर एक और कार खड़ी है। यह शायद उन गुंडों की कार होगी, जिनको मैंने बेहोश कर दिया है।

लेकिन अब यह कार मेरे काम आयेगी...

— उस कार का पीछा करने के लिए...

यह रही कोंटर की कार।

अब कुछ ही सेकंडों में मैं इसको पकड़कर इसकी जुबान खुलवा दूंगा।

लेकिन यह क्या? ये कार मेरे कंट्रोल से बाहर हो रही है... लगता है... जैसे ये अपने आप चल रही हो...

... ये मुझे महानगर के बाहर पहाड़ियों की तरफ ले जा रही है...

... इधर जाने का तो मकसद ही अक्लमंद हो सकता है..

... यह मुझे पहाड़ियों से गिराकर मारने का षड्यंत्र है।

लेकिन मुझे मरने का फिलहाल कोई शौक नहीं है। यह कार चाहे तो खड्ड में गिर सकती है, लेकिन मेरे बगैर।
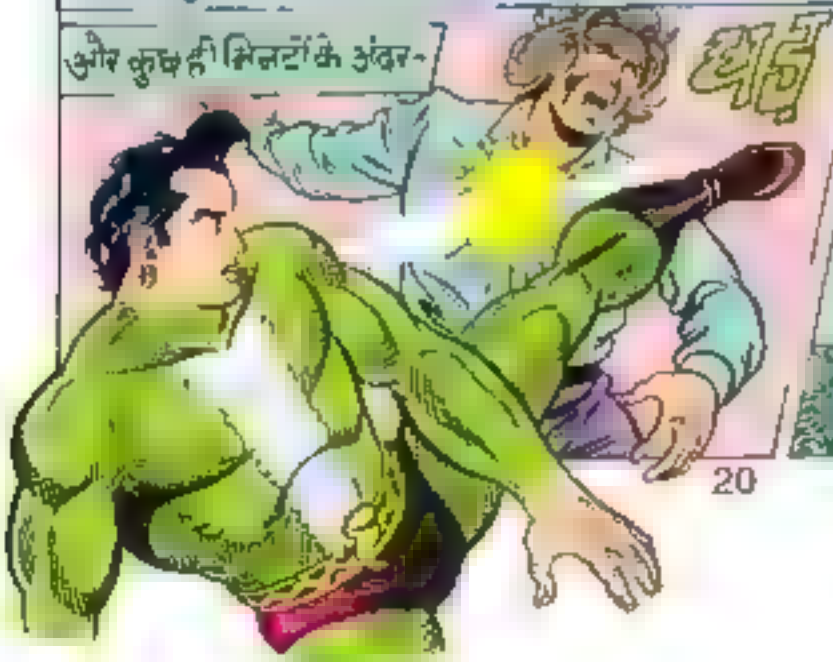
लेकिन इस चक्कर में वह कोरंटर मेरे हाथ से निकल गया। पर एक फायदा भी हुआ है।...
...इस कार के खड्ड में गिरने से दुश्मन यही समझेगा कि इसके साथ मैं भी...
अरे! यह क्या? यह कार तो बैक हो रही है... वापस ऊपर चढ़ रही है। आश्चर्य है.
लेकिन नागराज के लिए 'आश्चर्य' तो अभी सिर्फ शुरू हुआ था। उसकी आश्चर्य से फैली आंखों का और भी फैलना बाकी था -
क्योंकि उसकी आंखों के सामने...
यह क्या?
...वह कार धीरे-धीरे...
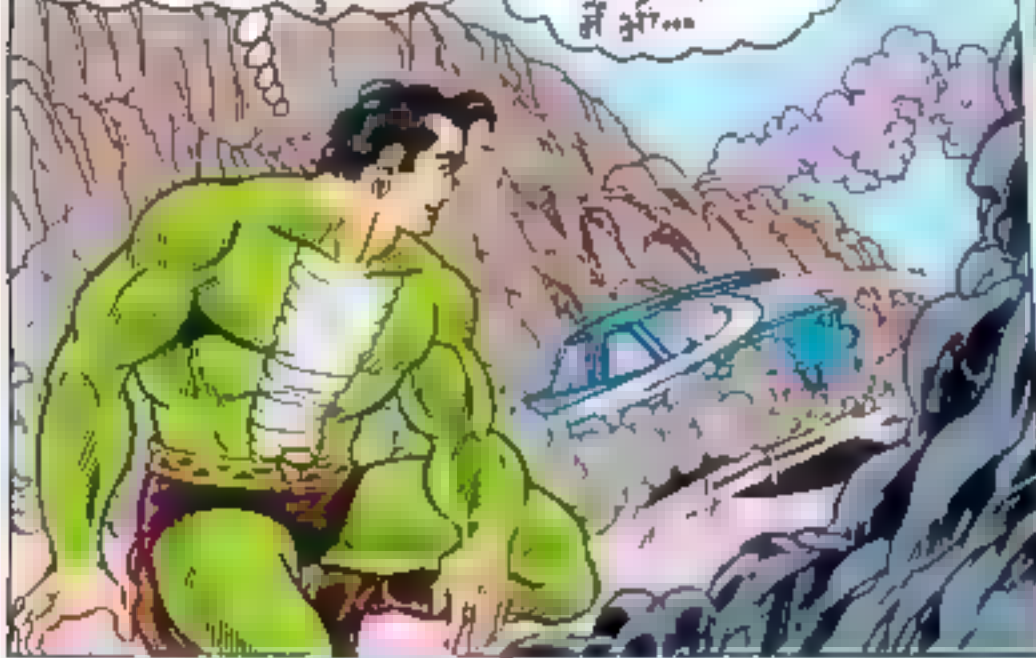
...एक रोबोट में तब्दील हो रही थी–

?
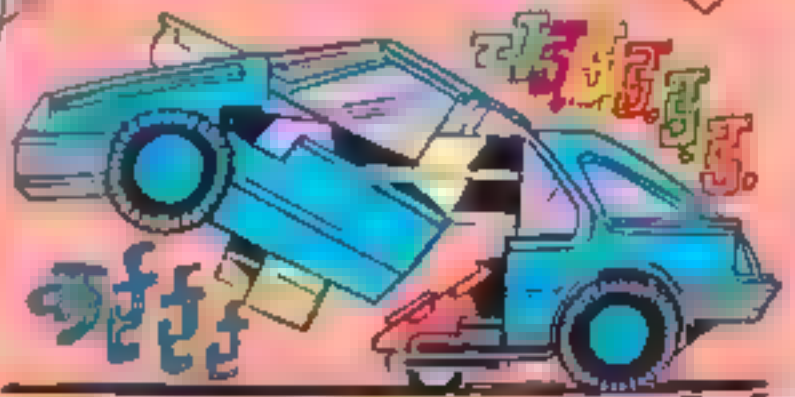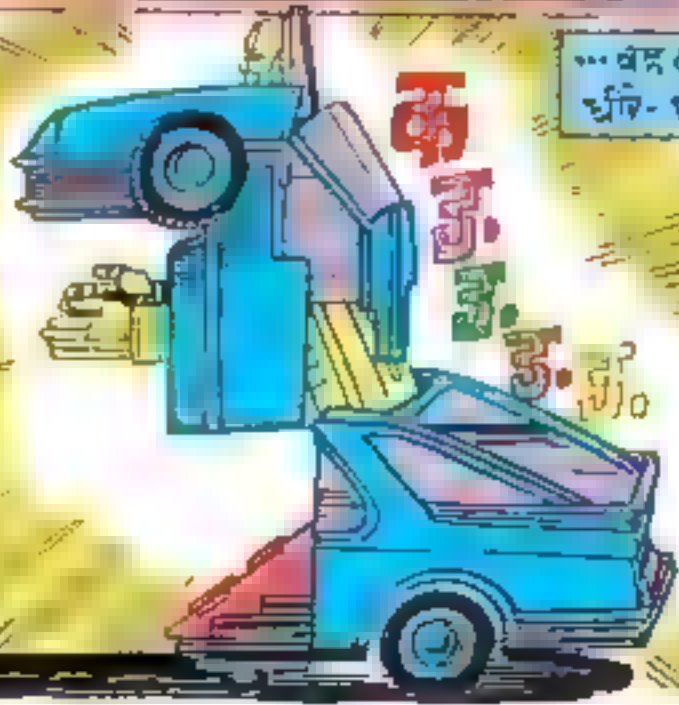
हे देवक लजयी! यह कार तो देखते ही देखते एक रोबोट में बदल गई— और ऐसा होने का एक ही कारण हो सकता है–
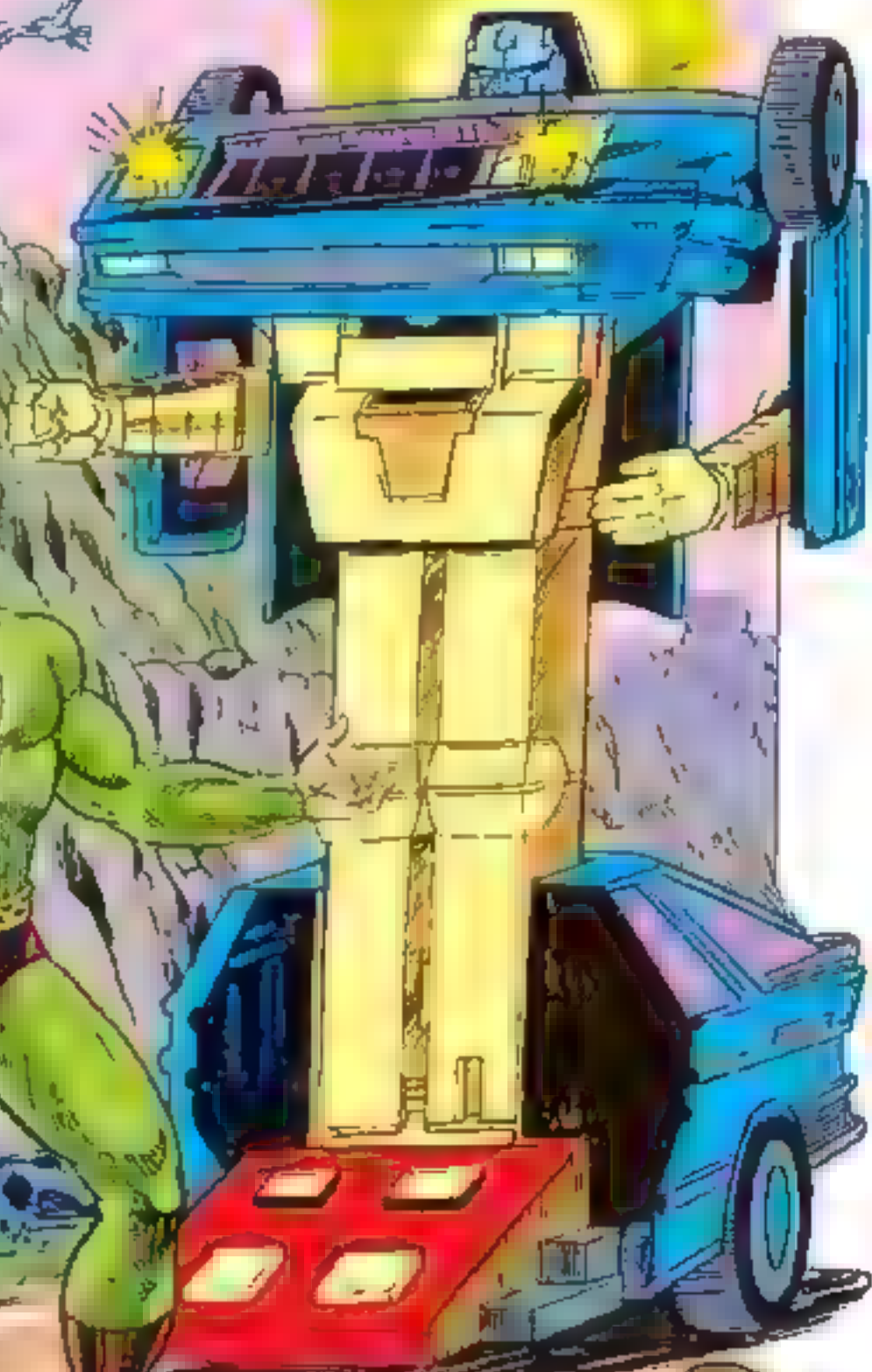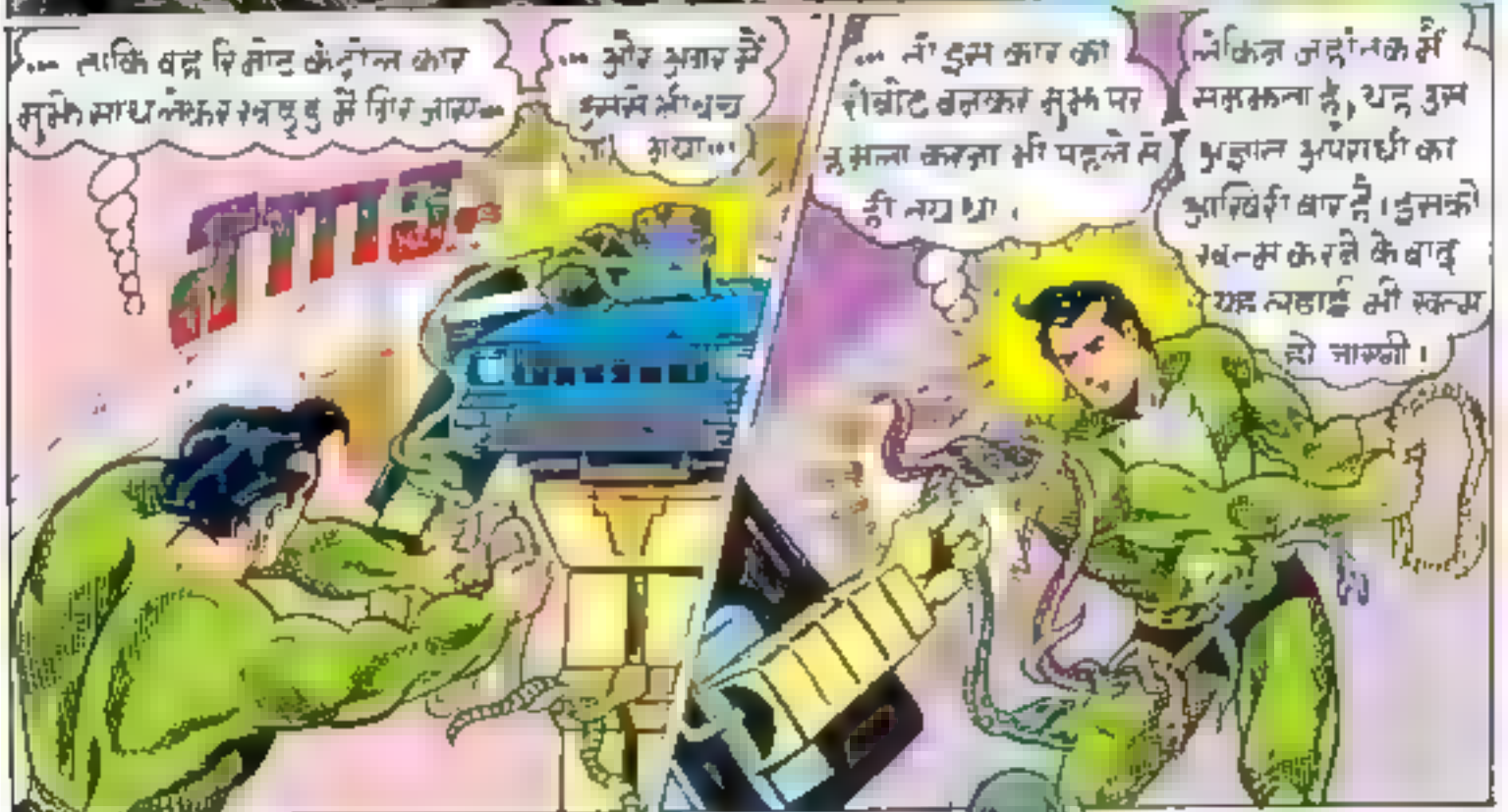
...और वह यह कि जिस अपराधी ने इस कार को भेजा है, वह सारा दृश्य देख रहा है और उसने मुझे मौत देने का पूरा इंतजाम कर रखा है...
...पहले मकान के अंदर गुंडों ने मुझ पर हमला किया...
...उनसे मेरी जान बच जाने की स्थिति में कंटेनर मेरे लिए तैयार था...
...और इससे बच जाने की स्थिति में उसका मारना और मेरे लिए एक कार का वहां पर होना पहले से ही तय था।
...ताकि वह रिमोट कंट्रोल कार मुझे साथ लेकर खड्ड में गिर जाए...
...और अगर मैं इससे भी बच गया...
...तो इस कार को रोबोट बनकर मुझ पर हमला करना भी पहले से ही तय था।
लेकिन जहां तक मैं समझता हूं, यह उस अज्ञात अपराधी का आखिरी वार है। इसको खत्म करने के बाद यह लड़ाई भी खत्म हो जाएगी।
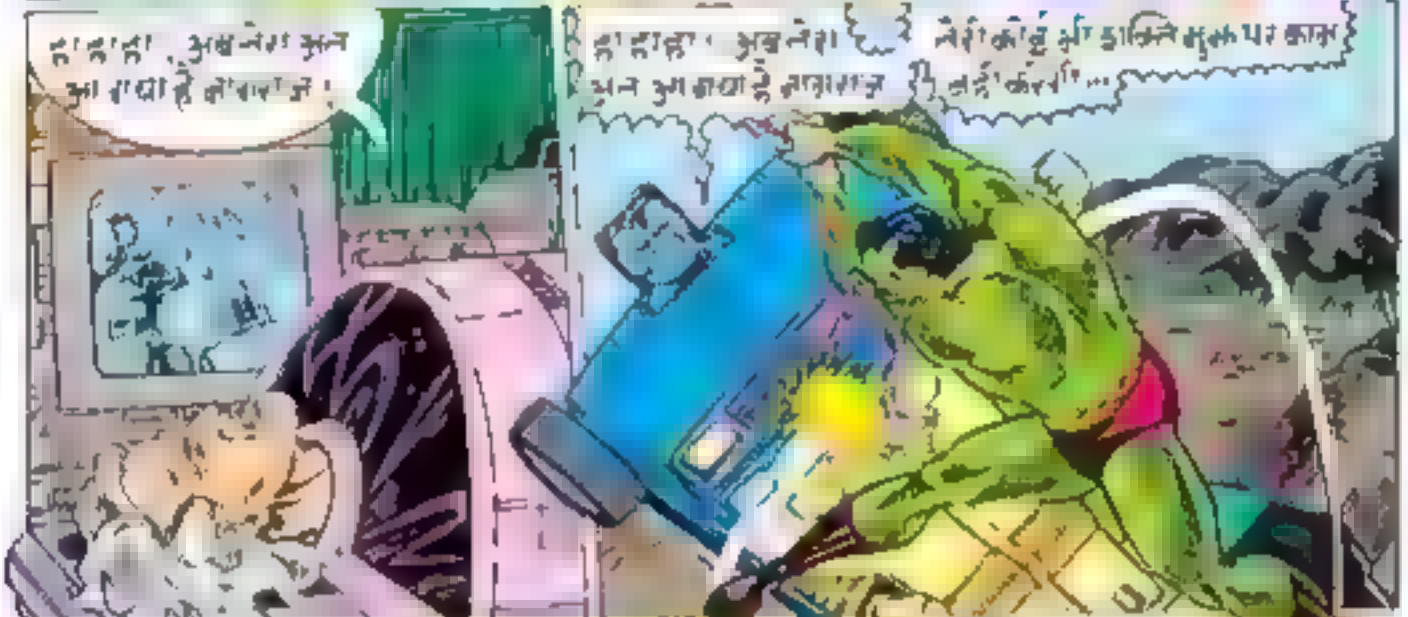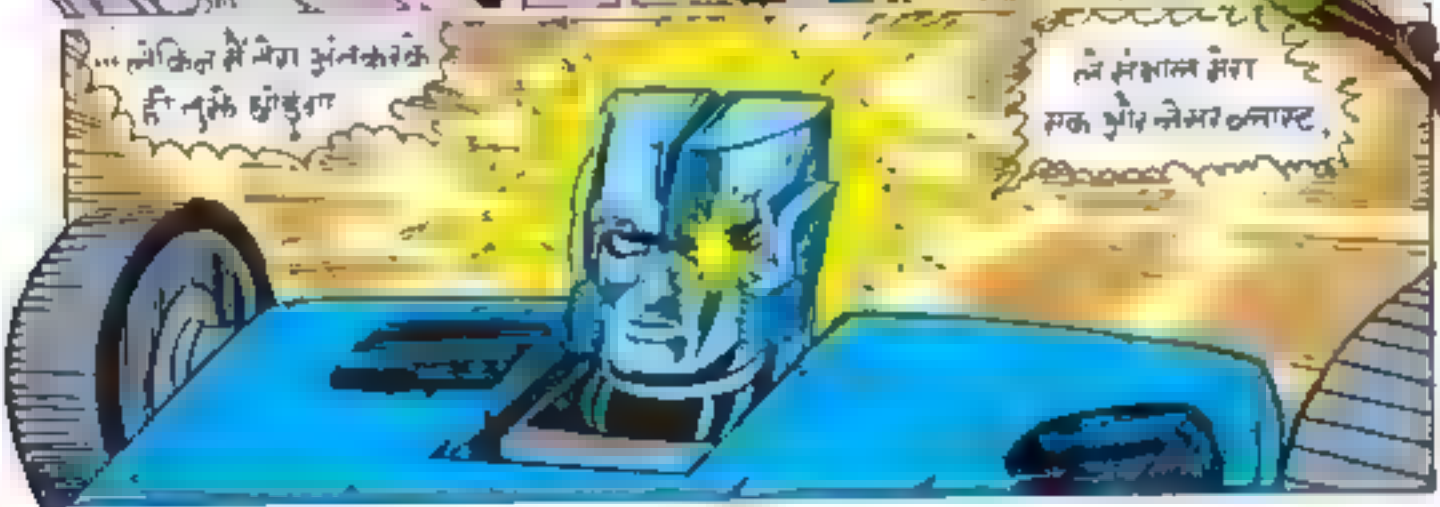
इस बार का लेसर ब्लास्ट बहुत शक्तिशाली था -
चट्टान के नुकीले टुकड़े तो हवा में उड़े ही उड़े, साथ ही साथ चट्टानों का एक बड़ा हिस्सा भी पिघल गया -
उफ़! बाल-बाल बचा!

ये कार से रोबोट बना है!
और अगर ये पहले कार था, तो इसमें पेट्रोल-टैंक जरूर होगा!...

... और इस टैंक में चट्टान का यह नुकीला टुकड़ा बड़े आराम से, इतना बड़ा छेद कर सकता है कि पेट्रोल बहने लगे...

... और यह दहकता हुआ चट्टान का टुकड़ा उसमें आग लगा सके।

देखते ही देखते आग की लपटों ने रोबोट को घेर लिया -
ओह! यह क्या?

और सुप्रीम हेड, अपनी सारी कोशिशों के बावजूद नाकाम हो गया –
नहीं ! यह नहीं हो सकता ! सुप्रीम हेड के शिकंजे से कोई नहीं बच सकता...
...नागराज भी नहीं।
नागराज की ताकत को हमने कम आंका था नमरा ! लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा ! नागराज मरेगा और जरूर मरेगा !
क्योंकि इस बार उसको हम मारेंगे।
आप उसको मारने खुद जाएंगे, सुप्रीम बॉस ?
शेर का शिकार, खुद चलकर उसकी मांद में आएगा ! तुम सिर्फ उसके बारे में जानकारी इकट्ठी करो, जितनी जानकारी मिल सके, उतनी !
नागराज मरेगा और जरूर मरेगा
कोई नागराज की मौत की तलाश कर रहा था...
... और कोई नागराज की जिन्दगी की तलाश कर रहा था –
उफ ! पिछले कई दिनों से नागराज की कुंडली की गणना करता आ रहा हूं। परन्तु हर बार कोई न कोई चूक हो जा रही है !
लेकिन आज मैं इस सत्य की गणना करके ही उठूंगा, कि नागराज के जीवन के वे अज्ञात चालीस वर्ष किस गुप्त स्थान पर व्यतीत हुए...

मेरी गणना पूर्ण तो नहीं हुई है! परंतु जहां तक मैं समझ पाया हूं...
...इन चालीस वर्षों के दौरान नागराज 65 डिग्री अक्षांश और 9 डिग्री देशान्तर पर था।
...पानी के अलावा वहां पर कुछ नहीं। वैसे भी वह स्थान महानगर से काफी दूरी पर है। नागराज वहां तक कैसे जा सकता था?
अगर मेरी गणना में कहीं गलती हो रही है, मुझे शुरू से एक बार फिर गहन गणना करनी होगी।
परंतु यह कैसे हो सकता है?
जहां तक मैं जानता हूं, इस स्थान पर तो भारतीय महासागर है...
वेदाचार्य यह नहीं जानते थे कि उनकी गणना में कहीं कोई गलती नहीं थी—
क्योंकि इस स्थान पर स्थित था दुनिया की निगाहों से छिपा हुआ...
...नागद्वीप—
संभलकर आगे बढ़ना भुजंबाहुन, द्वीप के इस भाग के बारे में कोई नहीं जानता! कोई कभी भी इधर नहीं आया।
इसीलिए तो कारागृह से भागे उस नरक क्रूरसर्पी ने छिपने के लिए इस भाग को ही चुना है।
लेकिन वह छिपेगा कहां? आज नहीं तो कल वह पकड़ा...
...ओह! यह रहा क्रूरसर्पी!
आह! परंतु ये अचेत है या सो रहा है?
ओह, ये तो मृत है।
मृत? परन्तु कैसे?
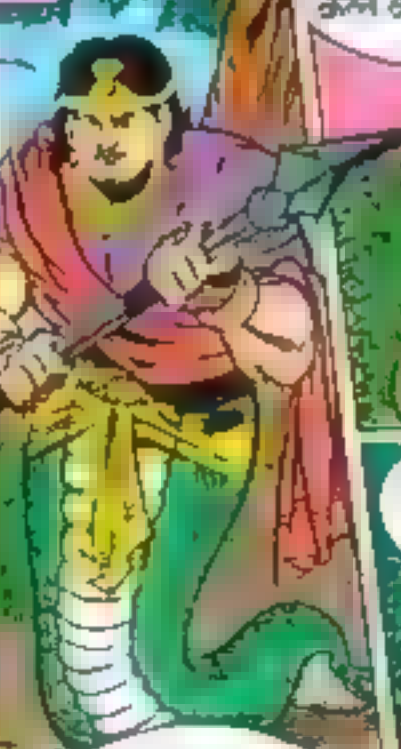
देखने में तो लगता है कि ये विष से मरा है। इस झाड़ के विषैले फल खाकर! इसका शरीर भी नीला पड़ गया है।

विष से मृत्यु! वह भी नागद्वीप के एक नाग-मानव की! परंतु कैसे?

आश्चर्यजनक समाचार, राजकुमारी विसर्पी तक भी पहुंच गया—

एक नागमानव की विष से मृत्यु! परंतु नागमानवों को तो सिर्फ महात्मा कालदूत का विष ही मार सकता है!

मैं महात्मा कालदूत के पास यह जहरीला फल लेकर जाऊंगी, और उनसे इस मामले पर प्रकाश डालने की प्रार्थना करूंगी।

आप भी मेरे साथ चलेंगे, महामंत्री जी।

जो आज्ञा, राजकुमारी जी।

महात्मा कालदूत वह फल देखते ही चौंक गए—

इस फल में तो देव कालजयी का विष है! इस फल को मेरा शत-शत प्रणाम!

परंतु यह विषभरा फल नागद्वीप में कैसे आया? जहां तक मैं जानता हूं, कालजयी देव ने तो इस द्वीप पर कभी दर्शन नहीं दिए!

देव कालजयी
बीच में बोलने के लिए क्षमा चाहता हूं, महात्मा, लेकिन मुझे एक बहुत पुरानी बात याद आ रही है!
कौनसी बात महामंत्री?
करीब 60-65 साल पुरानी बात महात्मा कालदूत! देव कालजयी स्वयं तो यहां नहीं आए थे, परंतु उन्होंने स्वप्न में कुमारी विसर्पी के पिता महाराज श्री मणिराज को दर्शन दिए थे
... और उनके आदेश से महाराज बाहरी दुनिया में जाकर एक शिशु को यहां नागद्वीप में लाए थे, उस शिशु को उसी स्थान पर रखा गया था, जहां पर एक कैदी कूलसर्प का विष से मृत शरीर मिला था...
... महाराज ने उस स्थान को निषिद्ध घोषित कर दिया था। महाराज की व्यक्तिगत सेविकाओं और राजवैद्य के अलावा वहां पर कोई नहीं जा सकता था!
बाहरी दुनिया का शिशु यहां नागद्वीप में आया था, मुझे इसकी सूचना क्यों नहीं दी गई?
आप उस समय समाधि में लीन थे महाराज! आपका ध्यान भंग करने का साहस किसी में नहीं था।
उसके बाद वह शिशु कहां गया?
इस बारे में मुझे कुछ पता नहीं, महात्मा।
कौन था वह अद्भुत शिशु?
कहां पर होगा इस वक्त वह शिशु?
और... और जिन्दा होगा भी या नहीं?
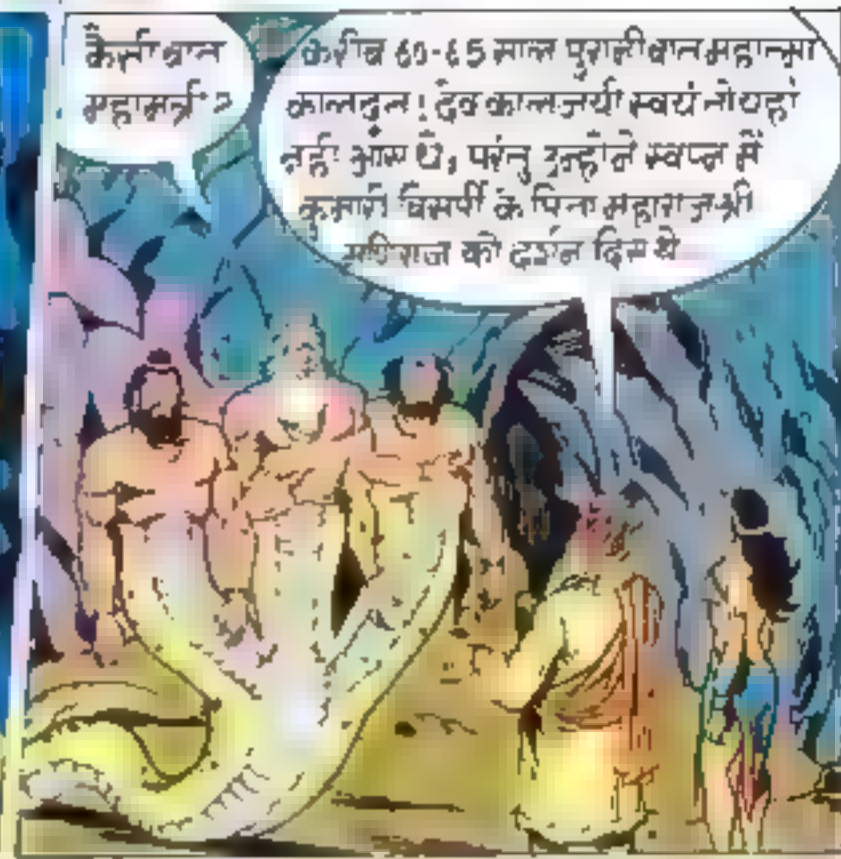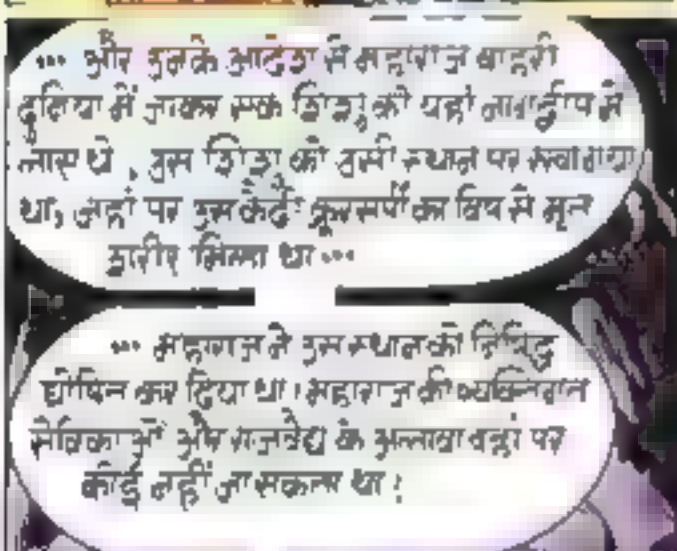
वह शिशु जिन्दा भी था, सकुशल भी था…
…और इस वक्त मद्रासनगर में था–
आपने मुझे याद किया, मैडम भारती?
हां राज! इनसे मिलो! ये हैं मेरे भूतपूर्व बॉस मिस्टर पहलेजा! हमारे होने वाले पार्टनर!
और मिस्टर पहलेजा, ये हैं मिस्टर राज, मेरे पर्सनल असिस्टेंट और हमारी 'भारती कम्युनिकेशन' के पी॰ आर॰ ओ॰, यानी पब्लिक रिलेशन ऑफिसर!
हैलो मिस्टर पहलेजा.
हां, तो अब काम की बात शुरू की जाए!
तो मिस्टर पहलेजा, आपका क्या ऑफर है?
यह तो तुम जानती ही हो भारती कि हमारी कंपनी की अपनी सेटेलाइट है। इसलिए पार्टनरशिप की कीमत कम से कम चालीस करोड़ तो होनी ही चाहिए.
तुम्हारा क्या कहना है, राज? चालीस करोड़ मुझे तो जरा ज्यादा लगते हैं। वैसे भी मिस्टर पहलेजा की कंपनी अभी काफी घाटे में जा रही है।
मेरे ख्याल से पैंतीस करोड़ ज्यादा ठीक रहेंगे! और कंपनी में 51 प्रतिशत हिस्सा! ताकि कंपनी का मैनेजमेंट हमारे पास रहे

हां, तो बॉस... मैंने एकदम परफैक्ट काम किया न!
परफैक्ट, भारती! अब मुझे एक गिलास दूध पिलाओ!

वापस लौटते हुए राज के दिमाग में कई सवाल घुमड़ रहे थे—
ये राज आखिर है कौन? पहले तो इसे भारती के साथ कभी नहीं देखा!
कुछ भी हो! आदमी काफी चालू लगता है, और सयाना भी,
लेकिन इससे भी बड़ा सवाल यह है कि भारती के पास एकाएक इतनी बेशुमार दौलत आई कहां से?
एक तरफ सवालों के जवाब ढूंढे जा रहे थे...

...और दूसरी तरफ-सवालों के जवाब मिल चुके थे—
सुप्रीम हेड को तमगा का आदाब!
ये रही नागराज से संबंधित सारी जानकारियों की कंप्यूटर डिस्क!

इसको मैं आपके कंप्यूटर में लोड करके चला देता हूं।
शाबाश तमगा! मुझे इन जानकारियों को ठीक से पढ़ लेने दो!
और फिर देखो नागराज की मौत का तमाशा।

अगली रात- महानगर में एकदम शांति रही। न तो सर्प-सेना के सैनिक कुछ ढूंढ सके, और न ही नागराज—
लेकिन अपराध तो वह जंगली झाड़ होता है, जो बार-बार जड़ से उखाड़ने पर भी फिर उग आता है—
और फिर- अगली रात को ही एक चीख ने अपराध के उस सन्नाटे को तोड़ दिया-
बचाओ ; बचा··· ऑफ,
जल्दी से माल निकाल लूं···
··· वर्ना कहीं नागराज आ गया तो···
··· हम सब मरे···
आह!

ये मामूली गुंडे हैं, उस चालाक अपराधी के आदमी नहीं लगते।
वैसे भी ये मेरा मुकाबला करने के बजाय भागने की कोशिश कर रहे हैं।...
...खैर! वह अपराधी कभी न कभी तो मुझ पर हमला जरूर करेगा।
तब तक मैं अपनी सर्प-सेना से मानसिक संपर्क बनाए रखूंगा।
धन्यवाद नागराज! मैं तुम्हारा अहसान हमेशा याद रखूंगी। आज तुमने मेरी जान बचाई है और इज्जत भी।
लेकिन तुम हो कौन? ऐसे कपड़े पहनकर रात के इस सन्नाटे में क्यों घूम रही हो?
यह मेरा शौक नहीं, मजबूरी है नागराज, मैं 'ओथेलो क्लब' में एक कैबरे डांसर हूं। परिस्थितियों से मजबूर होकर यह पेशा मुझे अपनाना पड़ा। आज लेट शो करके घर जा रही थी तो रास्ते में मेरी कार खराब हो गई।
इस शार्ट-कट से पैदल जा रही थी तो गुंडों ने घेर लिया...
ओह! चलो, मैं तुमको तुम्हारे घर तक छोड़ देता हूं, मिस...
शीला! मेरा नाम शीला है।
किस मजबूरी की वजह से तुमको यह पेशा अपनाना पड़ा, शीला?
मैं एक अच्छे घर की बेटी हूं, नागराज, एक केस में गवाही देने के कारण एक कमीने ने मेरे माता-पिता की बेदर्दी से कत्ल कर दिया।
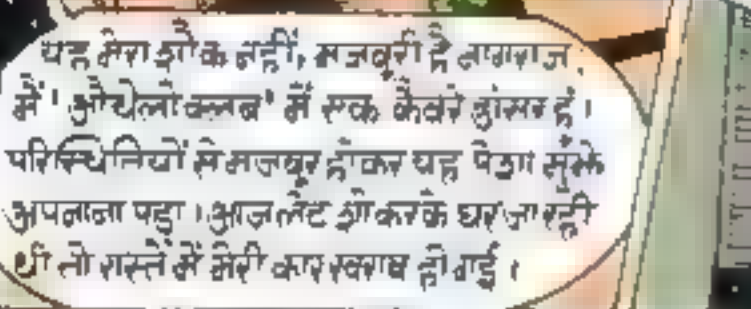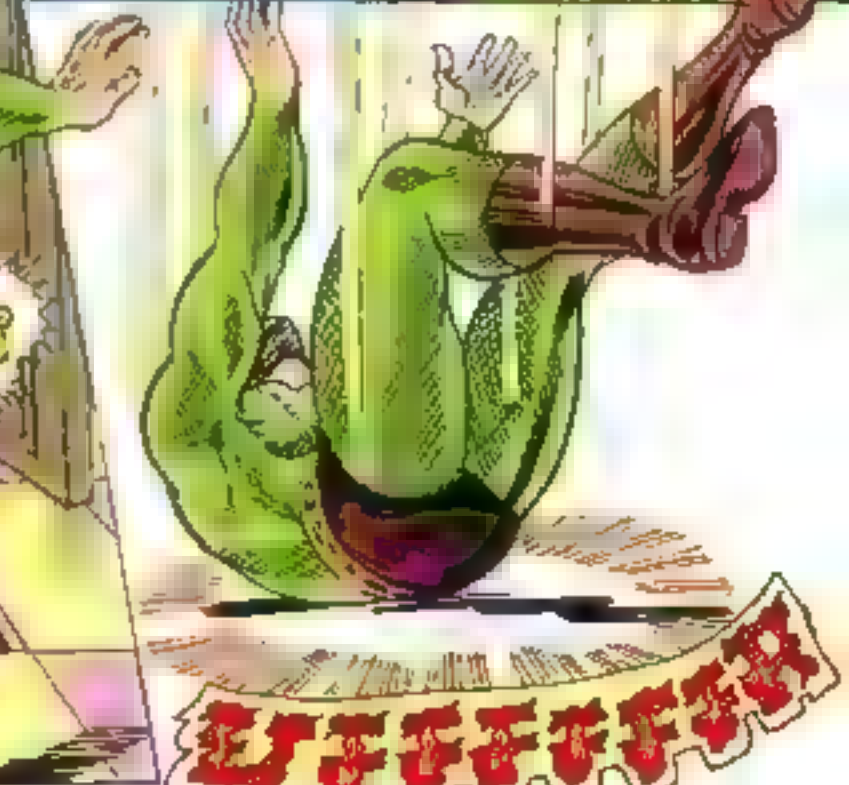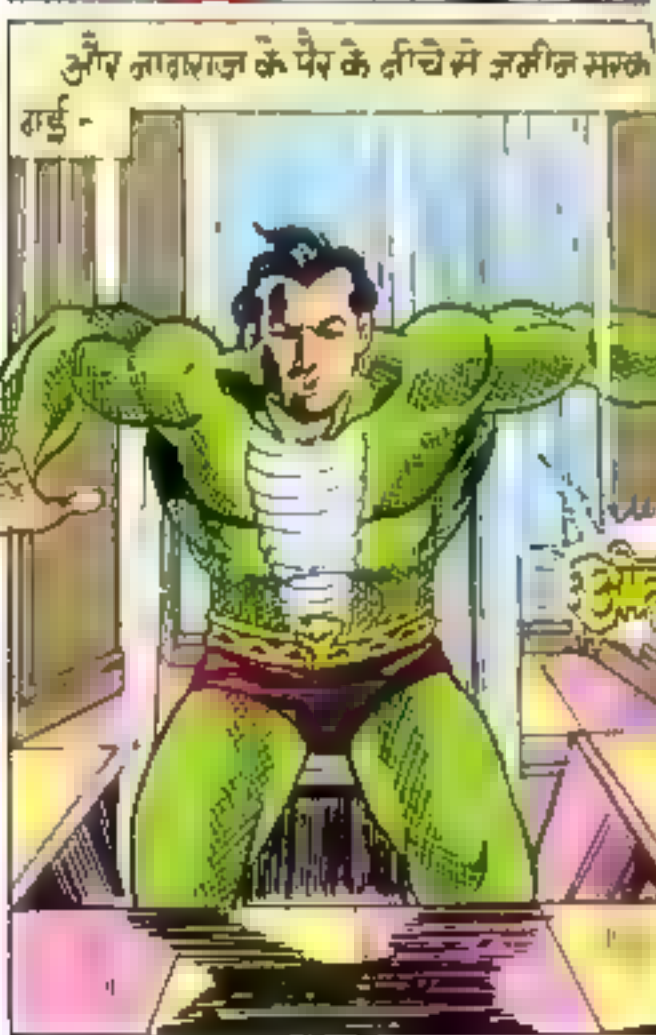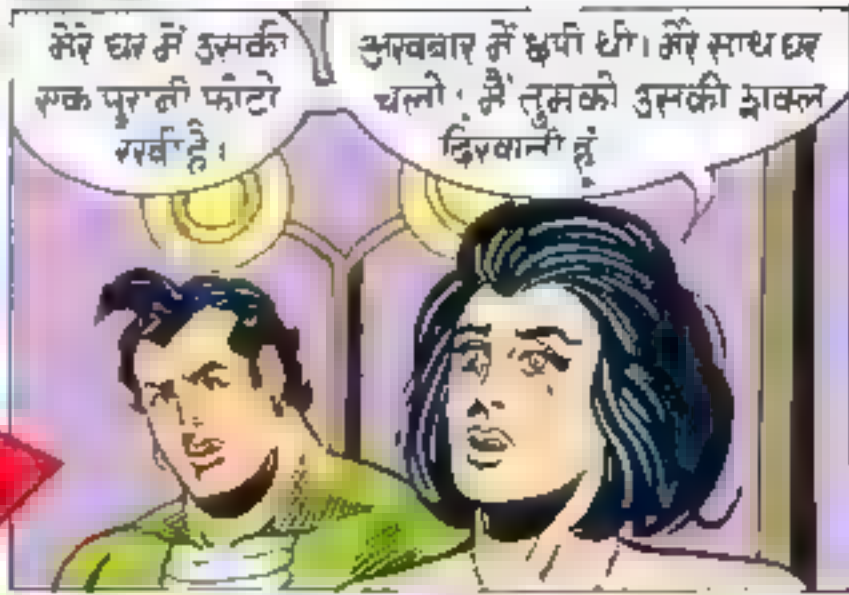
..और उस वजह से आज मैं कैबरे-डांसर बन गई...
...और वह करीमा महानगर का सबसे बड़ा बॉस बन गया।
महानगर का सबसे बड़ा बॉस?
यानी- यानी तुम उस अपराधी को जानती हो?
कौन है वह?
मेरे घर में उसकी एक पुरानी फोटो रखी है।
अखबार में छपी थी। मेरे साथ घर चलो। मैं तुमको उसकी शक्ल दिखाती हूं।
और शीघ्र ही-
आओ नागराज आओ!
मैं लाइट जलाती हूं।
लाइट का स्विच दबा-
और नागराज के पैर के नीचे से ज़मीन सरक गई-

कैसे हो नागराज?
कहीं चोट-वोट तो नहीं लगी?
तुमने मेरी जान किसी से नहीं बचाई नागराज! वे गुंडे मेरे ही आदमी थे.
और रही फोटो दिखाने की बात तो वह तुम सुप्रीम बॉस को खुद ही देख लोगे, अगर वहां पर पहुंचने तक जिन्दा रहे तो गुडबाय नागराज
ये क्या कह रही हो शीला? मैंने गुंडों से तुम्हारी जान बचाई थी.
गुडबाय नहीं शीला! मुझे इन दीवारों पर चढ़कर ऊपर पहुंचने में ज्यादा समय नहीं..
... ओह! मेरे हाथ लगाते ही दीवार से नुकीली कीलें बाहर निकल रही हैं...
... यानी दीवार से ऊपर चढ़कर जाने में खतरा है. न जाने कब कहां से कीलें निकल आएं... ओह....
... फर्श बीच से फट रहा है...
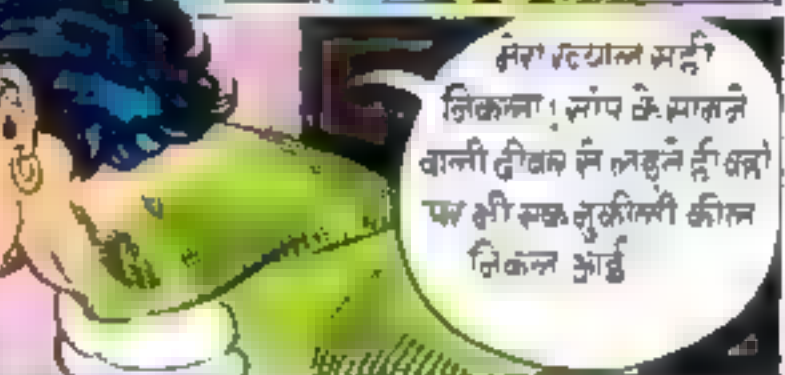
और मैं इस नागरस्सी पर झूलकर दहकते हुए लावे को पार करता हुआ...
...दीवार को तोड़कर...
धड़ाम
...दीवार की दूसरी तरफ निकल जाऊंगा!
मेरा ख्याल सही निकला. इस दीवार को खोखला होना ही था, क्योंकि मेरे दुश्मन ने इसके अंदर कीलें फिट की हुई थीं!
अगर ये दीवार पोली न होती तो मैं इसको तोड़ न पाता।
अब मुझे बाहर निकलना है। और इसके लिए मुझे रास्ता ढूंढ़ना...
तभी नागराज की आवाज को एक दूसरी आवाज ने खामोश कर दिया—
शाबाश नागराज, तूने पहली बाधा पार करके मेरा दिल खुश कर दिया। अगर तू इतनी आसानी से मर जाता तो मुझे सचमुच बहुत दुख होता।
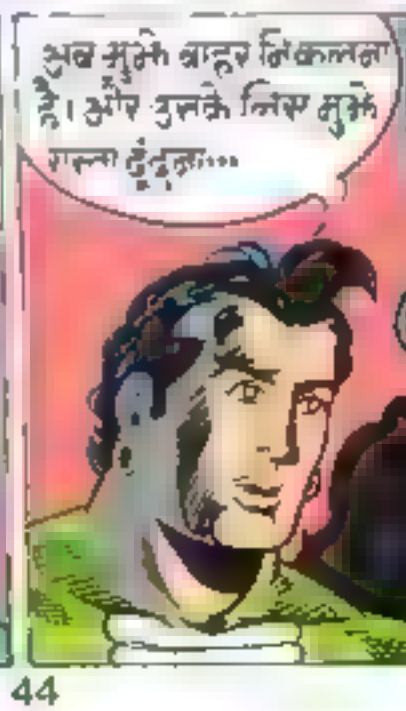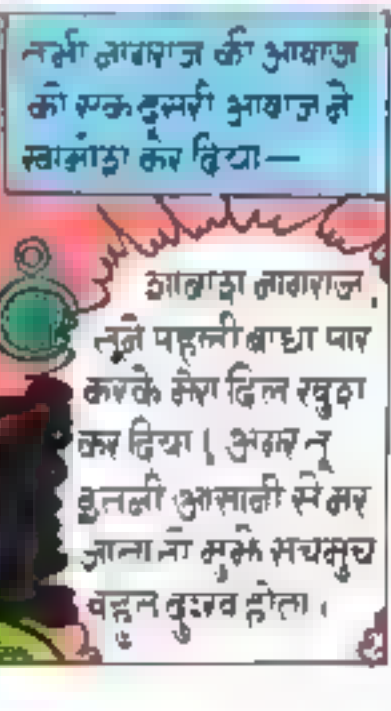
अरे, ये तो वही आवाज़ है, जो कार में लगे रोबोट में से आ रही थी।
हां नागराज, मैं वही हूं। और तेरी मौत का यह नाटक मैंने ही लिखा है। और ये नाटक तेरी शक्तियां जानने के बाद ही लिखा गया है...
...तू गोलियों से नहीं मरता! चाकू, भालों, तलवारों का तुझ पर असर नहीं होता। किसी भी जीवित प्राणी को तू अपनी विष-फुंकार से बेहोश कर सकता है। विष-दंश से मार सकता है।
लेकिन अगर तेरे शरीर का अंग, कोई अंग पूरी तरह से कट जाए तो वह फिर जुड़ नहीं सकता।
और अब तेरा एक अंग नहीं, बल्कि सारे अंग कटेंगे! और वह भी एक साथ...
...ऊपर देख।
ओह, यह तो एक धार-दार चाकू का जाल है...
...और यह मेरे ऊपर गिर रहा है।
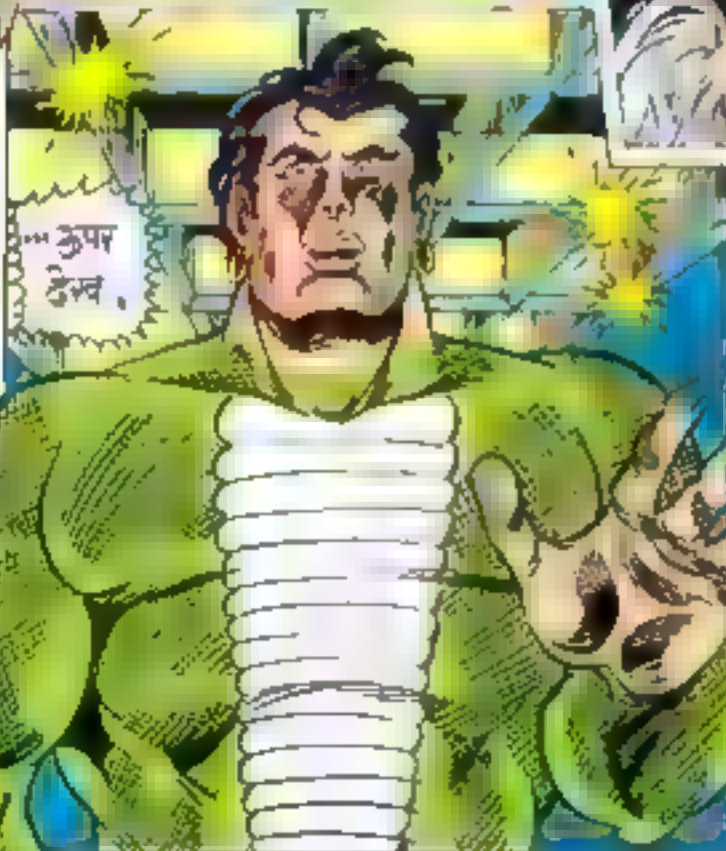
कमरा चारों तरफ से सील हो गया है..
...टूटी हुई दीवारें भी गायब हो गई हैं-
...बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है....
...और नहीं इस तेज धारदार जाल से बचने का।
मैं बच नहीं सकता; पर अपनी मौत को थोड़ी देर के लिए टाल तो सकता ही हूं।
शायद इतनी देर में बचने का कोई आइडिया सूझ जाए
नागराज की बलशाली भुजाओं ने टनों भारी जाल के बीच में घुसकर उसे थाम लिया...
...और कुछ पलों के लिए जाल का गिरना थम गया—
वाह, नागराज, वाह, सचमुच तेरे शरीर में हजारों नागों का असाधारण बल है लेकिन तू भी इस जाल को ज्यादा देर तक नहीं थाम सकता यह जाल गिरेगा! जरूर गिरेगा; और तेरे टुकड़े-टुकड़े कर देगा नागराज!
मैं इस जाल को कुछ ही सेकंड और थाम सकता हूं। लेकिन बचने का जो आइडिया मेरे दिमाग में आया है उसके लिए ये कुछ सेकंड ही बहुत हैं।
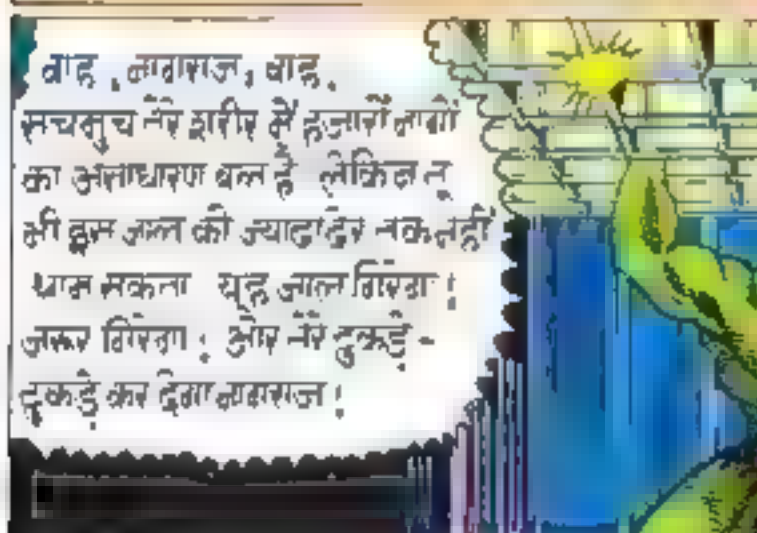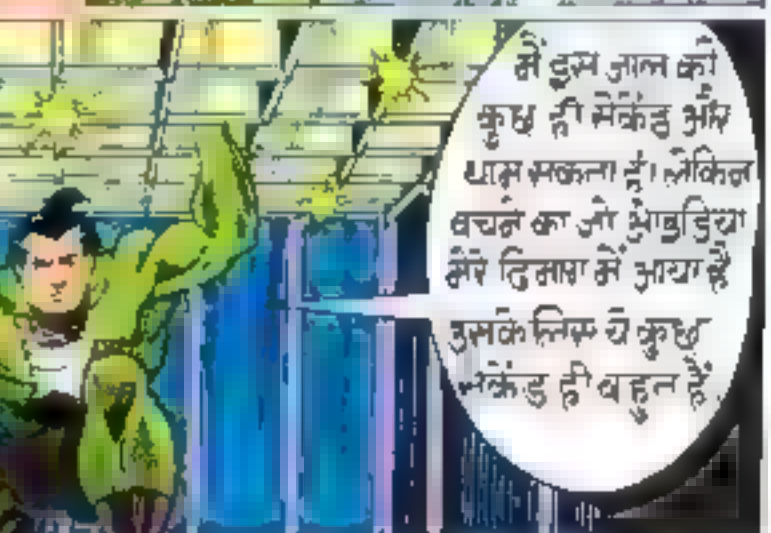
...और तेरे चिथड़े उड़ जाएंगे! लेकिन गोलियां रुकेंगी नहीं। पूरी की पूरी छः गोलियां चलेंगी...
...क्योंकि मैं चाहता हूं कि तीसरे राउंड से तेरा कीमा ही बाहर निकले!
ओह! यह तो एक फूलप्रूफ जाल लगता है। जिन्दा बाहर निकलना असंभव लगता है...
...और मेरे पास जिन्दगी के सिर्फ कुछ सेकेंड बचे...
अरे.... यह क्या है? लोहे का एक टुकड़ा नीचे दब रहा है...
...शायद यह बाहर निकलने का रास्ता है... नहीं...
...यह दिवार का अस्थायी हिस्सा है अगर मैंने इसको दबाकर बाहर निकलने की कोशिश की तो गोली चल जाएगी!
और बाहर जाने से पहले ही मेरे चिथड़े उड़ जाएंगे!
इस रास्ते से बाहर निकलने के लिए मुझे पहले गोलियों को खत्म करना होगा!
और उस काम में यह दबने वाला हिस्सा मेरी बहुत मदद करेगा।

गोलियों के धमाके के साथ-साथ किसी के ठहाके भी गूंज रहे थे–
हाहाहा!
मैं जानता था कि नागराज भी नागराज, यमराज तक मेरे तीसरे शत्रुपशु के रिवॉल्वर से नहीं बच सकता! इसीलिए मैंने चौथा शत्रुपशु बनाया ही नहीं था...
...मेरे अपराध-साम्राज्य को खत्म करने चला था वह मच्छर
सुप्रीम हेड के राज्य को खत्म करना चाहता था...
...लेकिन नागराज को ले गया यमराज!
कौन मानेगा कि असाधारण नागशक्तियों से युक्त नागराज का एक अपंग आदमी ने कीमा बना दिया!
कोई नहीं मानेगा सुप्रीम हेड! क्योंकि तुमने नागराज को मारा ही नहीं है.
नागराज! तू... तू जिन्दा कैसे बच गया?

तुमने अपने शत्रुग्रहों में सब-कुछ लगाया था सुप्रीम-हेड, लेकिन दिमाग नहीं लगाया था...
...दिमाग मैंने लगाया, और उनके सामने तुम्हारे मन के शत्रुग्रह ठहर नहीं सके।
विस्फोटक के छिद्र के रास्ते मैं यहां तक आ गया, और फिर तुम्हारे यन्त्रों ने मुझे तुम्हारे बारे में सब-कुछ बता दिया।
अब समस्या तो यह है, कि मैं तुम्हारा क्या करूं। तुम अपंग हो, और अपंगों पर नागराज वार नहीं करता।
सुप्रीम हेड अपंग ज़रूर है, लेकिन असहाय नहीं है, नागराज!
और यह तू अभी देख लेगा!
नागराज के संभलने से पहले ही, सुप्रीम हेड की मशीनी तेज़ी से आगे लपकी –
?
और नागराज के शरीर से आ टकराई –
टक्कर, किसी टैंक की टक्कर जैसी थी –
आऽऽऽह

लेकिन सुप्रीम हेड के पास पहुंचने से पहले ही नाग, राख के ढेर में बदल गये -

अगले ही पल- सुप्रीम हेड के कवच से कई तलवारें चमक उठीं-
और नागराज के शरीर को निशाना बनाकर लहराने लगीं-
ओह! अगर ये तलवारें मुझसे छू भी गईं तो मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे।...
...और मेरे अंग कटने के बाद फिर जुड़ नहीं सकते!
मुझे सुप्रीम हेड के रिमोट को जल्दी से जल्दी नष्ट करना होगा! और इसके लिए मुझे 'हेड' के हेड तक पहुंचना होगा!...
...पर इसके लेसर कवच का क्या करूं?
ये लेसर कवच तो यह मेरे मरने के बाद ही बंद करेगा...
...इसीलिए सबसे पहले मैं मरने का इंतजाम कर लूं!
—और अगले ही पल- एक तलवार नागराज के शरीर से आ टकराई—
नागराज की आंखें, पलभर के लिए सुप्रीम हेड की आंखों से टकराईं...

तलवारें घूमती रहीं, और दर्द से तड़पते नागराज के अंग कट-कट कर गिरते रहे–
और यह तड़पन नागराज की गर्दन कटने के साथ ही समाप्त हुई–
हा-हा-हा! मर गया नागराज! काट डाला मैंने नागराज को!
यह शायद मेरे मौत के षड्यंत्रों से इसीलिए बच गया था, क्योंकि इसकी किस्मत में तलवारों से कट कर मरना लिखा था!
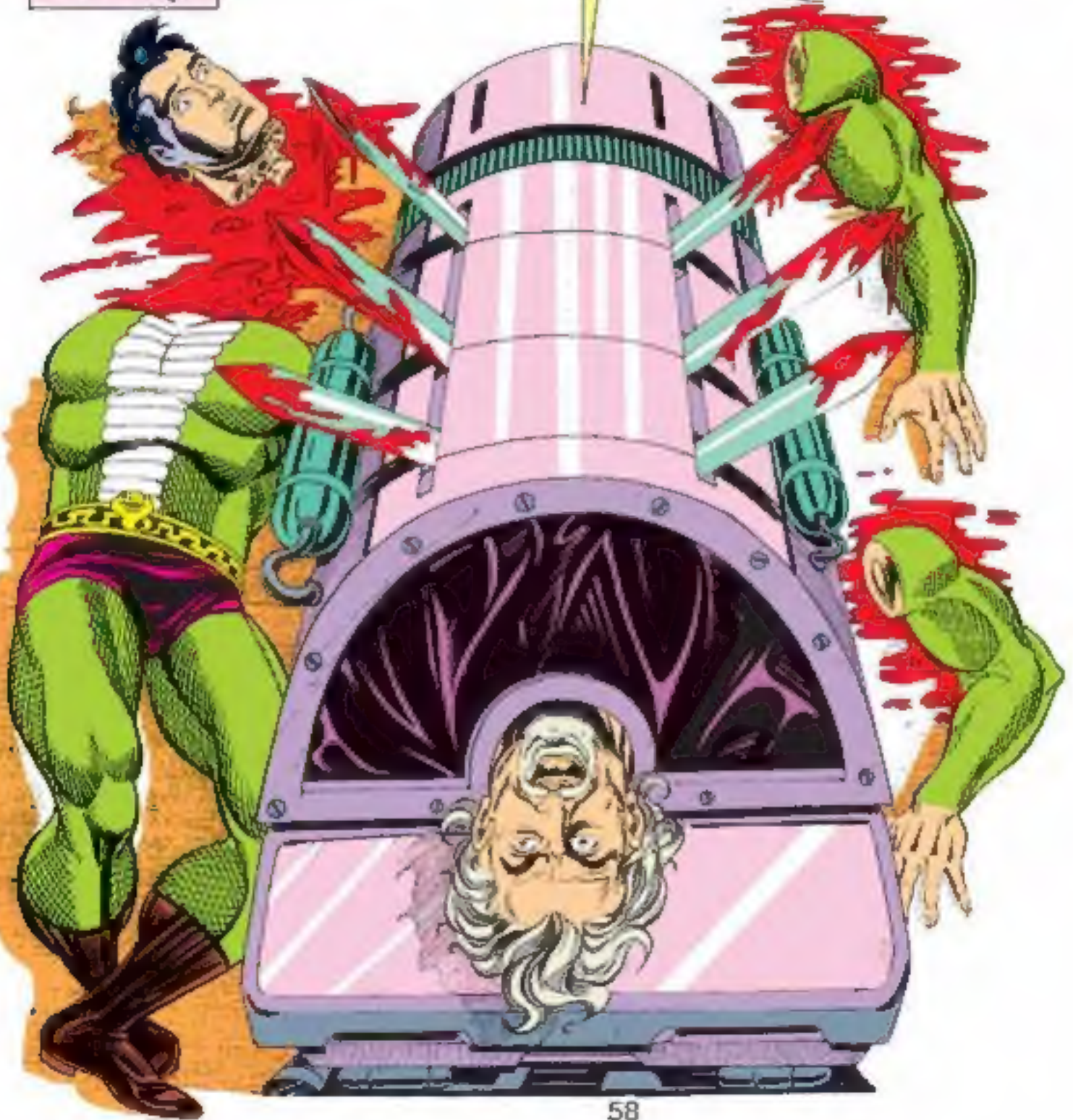
अब मुझे लेसर स्क्रीन की कोई जरूरत नहीं है।—और शायद अब कभी पड़ेगी भी नहीं।

सुप्रीम हेड ने लेसर-स्क्रीन ऑफ की—।

—और अगले ही पल - एक जोरदार घूंसे ने उसके सारे दांतों को जड़ से हिला दिया—

और दूसरे घूंसे ने जड़ से हिले दांतों को जड़ से उखाड़ दिया—

ना—नागराज! तुम...तुम फिर से जिन्दा बच गए?

कटने के बाद भी!

मैं कटा कब था, सुप्रीम हेड! वह तो मेरा सर्पक्लोन था, जिसने तुमको मेरी भयानक मौत का दृश्य दिखाया! मैं जानता था कि मुझे मरा समझकर तुम लेसर स्क्रीन जरूर बंद कर दोगे...

—और तब मैं तुम्हारे पास आकर, तुम्हारे दांतों को आराम से तोड़ सकूंगा! क्योंकि यह मैं समझ चुका था कि तुम्हारे सारे रिमोट-कंट्रोल तुम्हारे दांतों में लगे हैं, जिनको तुम जीभ से दबाकर चलाते हो!

तो तू समझता है तूने सुप्रीम हेड को खत्म कर दिया है, नागराज? नहीं नागराज नहीं! तूने मुझे सिर्फ एक छोटी सी शिकस्त दी है।...

सुप्रीम हेड इस वक्त असहाय जरूर है। लेकिन मैं वापस आऊंगा। जरूर आऊंगा, और पहले से ज्यादा शक्तिशाली बन-कर वापस आऊंगा...
...इतना समय तू अपना कफन खरीदने में इस्तेमाल कर ले। नागराज!
सुप्रीम हेड ने अपनी ठोड़ी से काले कपड़े को एक खास जगह पर दबाया...

...अगले ही पल दीवार में एक दरवाजा खुल गया—
और सुप्रीम हेड की सवारी उसमें समा गई—
?

नागराज के दीवार तक पहुंचने तक दरवाजा बंद हो चुका था—
ओह! बच निकला वह सुप्रीम हेड; लेकिन मैंने उसके दांत तो तोड़ ही दिए हैं।
फिलहाल वह देश और समाज के लिए कोई खतरा नहीं है।
और जब तक वह वापस आएगा, तब तक मैं उसका कोई न कोई इलाज सोच ही लूंगा।

लेकिन खतरा इस वक्त समाज और देश पर ही नहीं, पूरे विश्व पर मंडरा रहा था—
क्योंकि इसी वक्त- अंतरिक्ष में तैरती 'भारती-कम्युनिकेशन' की सेटेलाइट के पास—
यह सेटेलाइट हमारे काम के लिए एकदम उपयुक्त है। यही हमारा वह हथियार होगा, जिससे हम इस पृथ्वी को अपना गुलाम बनाएंगे। और इसकी शुरुआत होगी इस पृथ्वी के महानगरों की तबाही से।
समाप्त